जन्म कुण्डली में बनने वाले लगभग हजार योगों (समीकरणों) के आधार पर भविष्य जानने की सरल तालिकाएँ

तिलक चन्द 'तिलक'

भविष्य जानने की सरल विधि

... क्या उच्च शिक्षा का योग है ?
... विवाह कब होगा, दांपत्य जीवन कैसा होगा ?
... क्या किसी से रोमांस भी होगा ?
... उच्चाधिकारी बन पाएंगे कि नहीं ?
... विदेश यात्रा होगी कि नहीं ?
... मकान, संपत्ति व कार का योग है या नहीं ?
... कौन से कार्य सिद्ध होंगे, कौन से नहीं ?
स्वयं जानिए इन सवालों के हल

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

भविष्य जानने की सरल विधि

जन्म कुण्डली में स्थित ज्योतिष के योगों द्वारा भविष्य जानने की सरल विधि पर व्यावहारिक ज्ञान की अनूठी पुस्तक।

ज्योतिष एवं तन्त्र-मन्त्र की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें

➤ आओ ज्योतिष सीखें	तिलक चन्द 'तिलक'
➤ भृगु संहिता-फलित प्रकाश	महर्षि भृगु
➤ मन्त्र रहस्य	डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
➤ तान्त्रिक सिद्धियाँ	डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
➤ प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म	डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

वी एण्ड एस पब्लिशर्स की पुस्तकें

देश-भर के रेलवे, रोडवेज़ तथा अन्य प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध हैं। अपनी मनपसन्द पुस्तकों की माँग किसी भी नजदीकी बुक स्टॉल से करें। यदि न मिलें, तो हमें पत्र लिखें। हम आपको तुरन्त भेज देंगे। इन पुस्तकों की निरन्तर जानकारी पाने के लिए विस्तृत सूची-पत्र मँगवाएँ या हमारी वेबसाइट देखें -

www.vspublishers.com

भविष्य जानने की सरल विधि

ज्योतिष योग-संग्रह

तिलक चन्द 'तिलक'
ज्योतिषाचार्य

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • फ़ैक्स: 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© कॉपीराइट: वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521502-4-3

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

स्वकथन

अपना भविष्य जानना प्रत्येक मनुष्य की प्राकृतिक इच्छा होती है। भविष्य जानने की अनेक पद्धतियों में से सर्वाधिक लोकप्रिय है, जन्म कुडली द्वारा भविष्यफल जानना, जो प्रामाणिकता एवं सत्य के अधिक निकट रहता है।

जन्म कुंडली वास्तव में मानव के मन-मस्तिष्क एवं पूर्ण शरीर का ऐक्सरे है। जीवन के सभी रहस्य इसमें निहित हैं। इन्हीं रहस्यों का पता लगाने के लिए ज्योतिषी प्रायः योगों का सहारा लिया करते हैं, क्योंकि इन योगों द्वारा निहित रहस्यों को जानना अत्यंत सरल हो जाता है। इसीलिए पुस्तक का नाम 'भविष्य जानने की सरल विधि' रखा गया है।

देखने में आया है कि आजकल 70-75 प्रतिशत दंपती ऐसे हैं, जिन्हें दांपत्य जीवन का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं है। आपस में मनमुटाव व खटपट चलती रहती है, जिससे जीवन नीरस हो जाता है।

समय की आवश्यकता को देखते हुए हमने ज्योतिष योग संग्रह के इतिहास में प्रथम बार वर-कन्या चुनाव योग के शीर्षक से ऐसे योग दे दिए हैं, जिनके आधार पर दंपती आजीवन परम सुखी रह सकें।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष योग संग्रहों के इतिहास में प्रथम बार सैकड़ों महत्वपूर्ण योगों को शामिल किया गया है। इनमें धन संबंधी 137 योग, 201 राजयोग, वैवाहिक जीवन संबंधी 252 योग, 132 राशि परिवर्तन योग तथा ढेरों अन्य महत्वपूर्ण योग, जैसे मकान, भू-संपत्ति योग, उच्चपदाधिकारी योग, वाहन योग, विदेश यात्रा योग, चोरी होने का योग आदि जन साधारण की रुचियों व जिज्ञासाओं के अनुरूप सम्मिलित किए गए हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 892 योग दिए गए हैं।

वास्तव में स्थान-स्थान पर बिखरे फूलों को एक जगह एकत्र कर उन्हें आकर्षक रूप देकर गुलदस्ता प्रस्तुत किया गया है। इसमें मेरा क्या है? कुछ भी नहीं। मेरा तो मात्र प्रयास है।

इसमें एक नई चीज़ आप यह पाएंगे कि योग संग्रहों की प्रचलित परंपरा से परे हटकर सभी योगों का इस प्रकार से श्रेणीबद्ध वर्गीकरण कर दिया गया है कि आपको एक ही दृष्टि में जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर मिल जाएं।

नई विशेषताओं के कारण यह संग्रह केवल योग संग्रह न रहकर ज्योतिषी वर्ग तथा जन साधारण के लिए समान रूप से अत्यंत उपयोगी व संग्रहणीय ग्रंथ बन गया है।

पुस्तक की त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित कराने एवं नए सुझावों के लिए हमेशा की तरह आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी। आशा है आप तत्परता दिखाएंगे।

114-A, गांधी नगर
जम्मू-180 004
दूरभाष-(0191) 2459000

–तिलक चंद 'तिलक'

इस पुस्तक की उल्लेखनीय विशेषताएं

1. ज्योतिष योग संग्रहों के इतिहास में प्रथम बार यह विशाल योग संग्रह प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसमें भारी संख्या में (892) प्रामाणिक एवं विश्वसनीय योग दिए गए हैं, जबकि किसी योग संग्रह में चार-पांच सौ से अधिक योग देखने में नहीं आए।
2. ज्योतिष योग संग्रहों के इतिहास में पहली बार दांपत्य जीवन सुखी बनाने के लिए (वर-कन्या चुनाव योग) तथा वैवाहिक जीवन संबंधित भारी संख्या में (252) योग दिए गए हैं।
3. योग संग्रहों की प्रचलित परंपरा से परे हटकर सभी योगों का इस प्रकार श्रेणीबद्ध वर्गीकरण कर दिया गया है कि आपको एक ही दृष्टि में (At a glance) जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर भी मिल पाएंगे। जैसे विवाह कब होगा? होगा कि नहीं? दांपत्य जीवन कैसे सुखी रह सकता है? विदेश यात्रा होगी कि नहीं? उच्चाधिकारी बन पाएंगे कि नहीं? भूमि, भवन एवं संपत्ति आदि की प्राप्ति कैसी रहेगी? चोरी की संभावना कब हो सकती है? आदि।
4. शैली अत्यंत रोचक व भाषा अति सरल प्रयोग की गई है, एवं स्थान- स्थान पर टिप्पणी दे कर विषय को और भी स्पष्ट कर दिया गया है।

अंदर के पृष्ठों में

पहला अध्याय : धन योग ... **9**

गुप्त धन प्राप्ति योग 12

ससुराल/स्त्री द्वारा धन प्राप्ति योग 12

अनायास धन प्राप्ति योग 13

निर्धनता सूचक योग 14

दूसरा अध्याय : राजयोग ... **17**

प्रबल राजयोग 18

शत मंजरी राजयोग 22

अन्य विभिन्न राजयोग 44

पंच महापुरुष योग 53

विपरीत राजयोग 55

विशेष राजयोग 58

तीसरा अध्याय : अन्य योग ... **60**

चौथा अध्याय : उच्च पदाधिकारी योग ... **79**

पांचवां अध्याय : राशि परिवर्तन योग ... **83**

लग्नेश के राशि परिवर्तन से बनने वाले योग 84

द्वितीयेश ,, ,, ,, ,, ... 84

तृतीयेश ,, ,, ,, ,, ... 85

चतुर्थेश ,, ,, ,, ,, ... 86

पंचमेश ,, ,, ,, ,, ... 87

षष्ठेश के राशि परिवर्तन से बनने वाले योग 87
सप्तमेश " " " " 88
अष्टमेश " " " " 89
नवमेश " " " " 90
दशमेश " " " " 91
लाभेश " " " " 91
व्ययेश " " " " 92
महा योग का फल 93
खल योग का फल 93
दैन्य योग का फल 93
छठा अध्याय : वैवाहिक योग ... 94
विवाह योग 95
वर-कन्या चुनाव योग 96
विवाह संपन्न योग 102
विवाह बाधा योग 104
विलंबित विवाह तथा अविवाह 105
विलंबित विवाह योग 105
अविवाह योग 107
संतान/पुत्र प्राप्ति योग 109
संतान बाधा/विलंब से संतान प्राप्ति योग 110
वंश विच्छेद/पुत्राभाव योग 112
प्रेम विवाह योग 113
सातवां अध्याय : प्रकीर्ण योग ... 115
भूमि, भवन एवं संपत्ति योग 116
वाहन योग 117
विदेश यात्रा योग 119
चोरी होने का योग 120

पहला अध्याय

धन योग

मानव को जीवन निर्वाह के लिए धन की परम आवश्यकता होती है। जीवन के सभी सुख-साधनों की प्राप्ति धन होने पर ही संभव है। यही कारण है कि आज का मानव रातों-रात करोड़पति बनने के स्वप्न देखता रहता है। जीवन के लिए धन की इस महत्ता को देखते हुए ही, इस पुस्तक को 'धन योग' से प्रारंभ किया गया है।

कोई व्यक्ति कितना धनवान हो पाएगा, यह उसकी कुंडली में निहित होता है। इन्हीं निहित रहस्यों को प्रकट करते हैं, ये प्रामाणिक 'धन योग'।

इस अध्याय में धन प्राप्ति योग, गुप्त धन प्राप्ति योग, ससुराल/पत्नी पक्ष से धन प्राप्ति योग, अनायास धन प्राप्ति (लाटरी आदि) योग एवं निर्धनता सूचक योगों सहित, कुल 137 धन योग दिए गए हैं।

धन योग

जन्म कुंडली में बनने वाले कुछ प्रमुख धन योग नीचे दिए जा रहे हैं, इनमें से किसी एक योग के होने पर भी व्यक्ति को धन की प्राप्ति अवश्य होती है। एक से अधिक योग होने पर लाभ की संभावनाएं उतनी ही अधिक और प्रबल हो जाती हैं। प्रमुख धन योग निम्नांकित हैं :

1. लग्नेश (लग्न का स्वामी) व धनेश (दूसरे भाव का स्वामी) दोनों धन भाव (दूसरे भाव) में स्थित हों।
2. दूसरे भाव में शुभ ग्रह बैठा हो।
3. दूसरे भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो।
4. द्वितीयेश (धनेश) पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो।
5. द्वितीयेश के साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो।
6. बृहस्पति केंद्र में स्थित हो।
7. बुध पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो।
8. बृहस्पति त्रिकोण में स्थित हो।
9. बृहस्पति लाभ भाव (ग्यारहवें भाव) में स्थित हो।
10. द्वितीयेश उच्च राशि का होकर केंद्र में बैठा हो।
11. द्वितीयेश उच्च राशि का होकर त्रिकोण में बैठा हो।
12. धनेश लाभ भाव में हो, तथा लग्न वृश्चिक या कुंभ हो।
13. धनेश धन भाव में ही हो, तथा लग्न वृश्चिक या कुंभ हो।
14. लग्नेश जहां बैठा हो, उससे दूसरे भाव का स्वामी उच्च राशि का होकर केंद्र में बैठा हो।
15. धनेश व लाभेश स्व-मित्र राशिगत हों।
16. धनेश व लाभेश उच्च राशिगत हों।
17. लग्नेश, धनेश व लाभेश का परस्पर शुभ संबंध हो।
18. चंद्रमा व बृहस्पति की किसी शुभ भाव में युति हो।
19. बृहस्पति धनेश होकर मंगल के साथ हो।
20. चंद्र व मंगल दोनों एक साथ केंद्र में हों।
21. चंद्र व मंगल दोनों एक साथ त्रिकोण में हों।
22. चंद्र व मंगल दोनों एक साथ लाभ भाव में हों।
23. लग्न से तीसरे, छठे, दसवें व ग्यारहवें भाव में शुभ ग्रह बैठे हों।

24. सप्तमेश दशम भाव में अपनी उच्च राशि में हो।
25. सप्तमेश दशम भाव में हो, तथा दशमेश अपनी उच्च राशि में नवमेश के साथ हो।
26. मेष लग्न की कुंडली में लग्न में सूर्य, मंगल, गुरु व शुक्र यह चारों यदि नवम भाव में हों तथा शनि सप्तम भाव में हो।
27. मेष लग्न की कुंडली में लग्न में सूर्य व चतुर्थ भाव में चंद्र स्थित हो।
28. वृष लग्न की कुंडली में बुध-गुरु एक साथ बैठे हों तथा मंगल की उन पर दृष्टि हो।
29. मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र-मंगल-शुक्र तीनों एक साथ द्वितीय भाव में हों।
30. मिथुन लग्न कुंडली में शनि नवम भाव में तथा चंद्र व मंगल ग्यारहवें भाव में हों।
31. मिथुन लग्न कुंडली में दशम भाव में गुरु व शुक्र दोनों एक साथ बैठे हों।
32. मिथुन लग्न कुंडली में चंद्र तथा मंगल लाभ भाव में हों।
33 कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र-मंगल-गुरु दूसरे भाव में तथा शुक्र-सूर्य पंचम भाव में हों।
34. कर्क लग्न की कुंडली में लग्न में चंद्र तथा सप्तम भाव में मंगल हो।
35. कर्क लग्न कुंडली में लग्न में चंद्र तथा चतुर्थ में शनि हो।
36. सिंह लग्न कुंडली में सूर्य, मंगल तथा बुध, यह तीनों कहीं भी एक साथ बैठे हों।
37. सिंह लग्न कुंडली में सूर्य, बुध तथा गुरु, यह तीनों कहीं भी एक साथ बैठे हों।
38. सिंह लग्न कुंडली में बुध पंचम, एकादश या द्वितीय भाव में हो।
39. कन्या लग्न कुंडली में शुक्र व केतु दोनों धन भाव में हों।
40. तुला लग्न कुंडली में चतुर्थ भाव में शनि हो।
41. तुला लग्न कुंडली में गुरु अष्टम भाव में हो।
42. वृश्चिक लग्न कुंडली में बुध व गुरु कहीं भी एक साथ बैठे हों।
43. वृश्चिक लग्न कुंडली में बुध व गुरु की परस्पर सप्तम दृष्टि हो।
44. वृश्चिक लग्न कुंडली में गुरु व बुध पंचम भाव में तथा चंद्रमा ग्यारहवें भाव में हो।

45. धनु लग्न वाली कुंडली में दशम भाव में शुक्र हो।
46. मकर लग्न कुंडली में पंचम भाव में चंद्र, नवम भाव में गुरु तथा लग्न में बुध व शुक्र हों।
47. मकर लग्न कुंडली में लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में चंद्र हो।
48. मकर लग्न कुंडली में बुध व शुक्र लग्न में हों तथा पंचमस्थ चंद्रमा पर गुरु की दृष्टि हो।
49. कुंभ लग्न कुंडली में गुरु किसी भी शुभ भाव में बलवान होकर बैठा हो।
50. कुंभ लग्न कुंडली में दूसरे भाव में गुरु तथा लाभ भाव में शुक्र हो।
51. कुंभ लग्न कुंडली में दशम भाव में शनि हो।
52. मीन लग्न कुंडली में लाभ भाव में मंगल हो।
53. मीन लग्न कुंडली में छठे भाव में गुरु, आठवें में शुक्र, नवम में शनि तथा ग्यारहवें भाव में चंद्र-मंगल हों।

गुप्त धन प्राप्ति योग

54. धनेश व चतुर्थेश नवम भाव में शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युत हों या दृष्ट हों।
55. लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में हो तथा द्वितीयेश अष्टम भाव में हो।
56. अष्टमेश तथा लाभेश दोनों ही चतुर्थ भाव में हों।
57. अष्टमेश लाभ भाव में तथा लाभेश अष्टम भाव में हो।
58. लग्नेश धन भाव में हो।
59. लग्नेश, धनेश, लाभेश तीनों लाभ भाव में हों।
60. लाभेश लग्न में, लग्नेश धन भाव में तथा धनेश लाभ भाव में हो।
61. वृष लग्न कुंडली में सूर्य तथा बुध पंचम भाव में स्थित हों।
62. वृष लग्न कुंडली में बृहस्पति व सूर्य एक साथ पंचम भाव में बैठे हों।

ससुराल/स्त्री द्वारा धन प्राप्ति योग

63. धनेश सप्तम भाव में हो तथा शुक्र से युत या दृष्ट हो।
64. चतुर्थेश व सप्तमेश दोनों चतुर्थ भाव में हों।
65. चतुर्थेश व सप्तमेश दोनों सप्तम भाव में हों।